कान्हा छोटो सो | By Vrinda

भादो महीना तिथि अष्टमी रात अहीरी है आयो
कान्हा छोटो सो.....
कान्हा छोटो सो.....
तीन लोक का नाथ है ये जो बालक रूप में है आयो
कान्हा छोटो सो.....
कान्हा छोटो सो.....
मैं वारी वारी जाऊं
कान्हा छोटो सो.....
कान्हा छोटो सो.....

मामा कंस की जेल में प्रकटा अपना दर्श कराया
पहरेदार भी नींद में पड़ गए माया जाल बिछाया
कट गई बेड़ी खुल गए ताले बालक रूप बनाया
लेकर वासुदेव चले हैं टोकरी में लिटाया
कान्हा छोटो सो.....
कान्हा छोटो सो.....

जब पहुंचे हैं नदी किनारे यमुना जल चढ़ आयो
घन घन घन घन बदरा बरसे लेहरो ने शोर मचायो
दर्शन करने अपने प्रभु के यमुना ने ज़ोर लगाया
जब कान्हा ने पैर छुआए घुटनो तक जल आयो
कान्हा छोटो सो.....
कान्हा छोटो सो.....

देवकी ने तो जन्म दिया पलना है यशोदा झुलाया
धन्य धन्य यशोदा मैया जिसने गोद खिलायो
नन्द बाबा के आंगन में आनंद आनद छायो
वीणा गोपियाँ मंगल गायें सुमिरन थाल बजायो
कान्हा छोटो सो.....
कान्हा छोटो सो.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a5%8d%e0%a4%b9%e0%a4%be-%e0%a4%9b%e0%a5%8b%e0%a4%9f%e0%a5%8b-%e0%a4%b8%e0%a5%8b-by-vrinda/